भेंड़ियों का मांगपत्र

भेड़िये आजकल बहुत दुःखी हैं
और गुस्से से भी भरे हुए
मेमने एकदम असहिष्णु हो गये हैं
न अपना खून पीने देते हैं
न अपना मांस खाने
भेड़ियों का सरदार चीखता है
यह सरासर अन्याय है
वह चिल्लाता है
यह बर्दाश्त नहीं किया जायेगा
वह दहाड़ता है
मेमनों को देख लिया जायेगा
यह अजब-गजब नज़ारा है
भेड़िये मेमनों को
देख लेने की धमकी दे रहे हैं
सचमुच
मेमने बहुत बदतमीज हो गये हैं
वे बलि की वेदी से
और भेड़ियों के जबड़े से
भाग जा रहे हैं
घोर कलियुग है
मेमनों की असहिष्णुता के सामने
भेड़िये असहाय हैं
वे सर्वोच्य न्यायालय में
गुहार लगाते हैं
मेमने क़ानून का उल्लंघन कर रहे हैं
उन्हें भेड़ियों के मुंह में डाला जाये
फ़िर भी भागें तो
टुकड़े-टुकड़े कर सीधे पेट में
सर्वोच्च न्यायालय को
भेड़ियों से सहानुभूति है
संवैधानिक पीठ इसका फ़ैसला करेगी
भेड़ियों को चैन नहीं
अदालतों का क्या भरोसा ?
और इंतज़ार भी बरसों-बरस
क्या 'डाइरेक्ट ऐक्शन' शुरू करें ?
1922 और 1933
में सफ़ल हो गये थे
तो अब क्यों नहीं ?
भेड़ियों का मांगपत्र तैयार है
या यूं कहें कि घोषणापत्र
या फ़िर
से आदेशपत्र भी कह सकते हैं
मेमनों की असहिष्णुता
प्रतिबंधित की जाती है
इसे राजद्रोह घोषित किया जाता है
साथ ही देशद्रोह भी
मौत से कम इसकी सज़ा नहीं
सज़ा जेल की चारदीवारी में नहीं
सीधे सड़क पर
हर भेड़िया स्वतंत्र है सज़ा देने के लिये
अदालत जाने की जरूरत नहीं
यह भेड़ियों के रामराज्य का
मांगपत्र या आदेशपत्र है
उन्हें उम्मीद है कि उनका रामराज्य आ जायेगा
बस मेमने इसको स्वीकार करने को तैयार नहीं

-अनिकेत की कविता

यात्रियों की मुसीबतें, बढ़ा रहीं रेलवे का मुनाफ़ा

पिछले डेढ साल में यानी कि देश में जब से मोदी सरकार आई है तब से ट्रेन का किराया डेढ गुणा बढ गया है। मोदी सरकार और रेल मंत्री सुरेश प्रभु जोर-शोर से प्रचारित कर रहे हैं कि चलती ट्रेन में किसी स्त्री की सुरक्षा से लेकर यात्री के गंदगी की शिकायत की भनक लगते ही तुरंत कार्यवाही की जाएगी। पर यात्रियों के लिये निराशाजनक ही नहीं बल्कि और पहले से भी ज़्यादा दुगर्ति हो रही है। न ट्रेनें वक्त पर चल रही हैं और न टिकटों की कालाबाज़ारी पर कोई रोक है। पिछले हफ़्ते एक टीवी चैनल को दिए साक्षात्कार में रेल मंत्री सुरेश प्रभु ने बात कही, कि सातवें वेतन आयोग और विस्तार पर खर्च के चलते पैसे की कमी जरूर है, लेकिन इन सभी दिक्कतों के बावजूद यात्री सुविधाएं के बढाने पर जोर दिया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि एक साल में बहुत कदम उठाए गए हैं। 110 बिंदुओं पर काम शुरू किया है। रेलवे में खान-पान से लेकर सफ़ाई पर खास जोर दिया गया है। रेलमंत्री के मुताबिक रेलवे पर अभूतपूर्व वित्तीय भार है, ऐसे में बजट संतुलन बनाने में दिक्कत हो रही है। रेलवे की आमदनी घटी है और खर्च बढ रहा है, फ़िर भी मालभाड़े में काफ़ी कमी की गई है। प्रभु ने ऐसा भी कहा कि कैपिटल खर्च को लेकर चिंता नहीं है, लेकिन चालू खर्च को लेकर चिन्ता जरूरी है।

रेल का खान-पान तो और भी महंगा हो गया हैऔर गन्दगी भी बढती गई है। जनता के जेब में डाका मारना ही इनका कर्त्तव्य है। दुरन्तो और राजधानी में टिकट बुक कराते वक्त ही खाना के पैसे वसूल कर लेते हैं। इतने पैसे वसूलने के अलावा हाल में ही राजधानी ट्रेन के खाना में मख्खी निकल गई थी। तब से वेटर खाना देने के बाद फ़िर लिखवाने भी आता है कि खाना में कोई शिकायत नहीं है। उतरते वक्त बक्सीश अलग से, यात्री को ट्रेन से उतरते वक्त तक जेब बिल्कुल खाली पड़ ही जाती हैं।

दुर जाने वाले यात्री गण तो बिना आरक्षित को जा नहीं सकते अब उनके के लिये तो और ज़्यादा परेशानी का आलम है। मार्च तक यह नियम था कि यात्रीगण 2 महीने पहले टिकट बुकिंग कराते थे। अब अप्रैल माह से 4 महीने पहले का नियम बना दिये हैं। किसी व्यक्ति को कहीं जाना है तो चार महीने पहले प्रोग्राम फ़ाइनल नहीं होता। टिकट ले भी लिया है तो, किसी कारण बस जाने का प्रोग्राम कैंसिल हो गया, इससे रेलवे को फ़ायदा है कि अब उनके टिकट के वापसी पैसे एक तिहाई ही मिलेंगे। उसमें भी चार दिन पहले कैंसिल करवाने पर। तीन दिन पहले एक पैसा भी नहीं। जब यात्रियों को कॉनफ़र्म टिकट नहीं मिलता है तो सोचते हैं कि चलो तत्काल में ही ले लेंगे। पर तत्काल में लेने पर डेढ-दो सौ रुपये ज़्यादा देना पड़ता है। अगर उसमें भी टिकट कॉनफ़र्म नहीं होता तो दुर जाने वाले यात्रीगण कैसे जा सकेंगे। फ़िर टिकट वापस करवाने पर 150 रुपये उसमें से भी रेलवे खायेगा। टिकट करवाते वक्त भी डेढ सौ और कैंसिल होते वक्त भी डेढ सौ यानी 300 रुपये जेब से निकल जायेगा। जिसके जेब पर सरकार इतना डाका डालेगी उसके ऊपर क्या गुजरेगा। पहले तो कहा गया कि डीजल के दाम बढने के कारण ट्रेन किराया बढ़ गया है। परंतु डीजल का दाम घटने पर भी किराया में और ज़्यादा ही बढोत्तरी हो गया।

बात पिछले हफ़्ते की है ग्रेटर फ़रीदाबाद मकान नं. 1 डी 4 निवासी अलीशा को किसी कारणवश जल्दी बाज़ी में पटना जाना था तो उसने पहले राजधानी का टिकट ली। सीट कन्फ़र्म नहीं होने पर कैंसील करवाई जिसमें उसको 1900 में 600 रुपये मिले। फ़िर तत्काल में सम्पर्क क्रान्ति में ली तो उसमें भी 150 रुपये ज़्यादा लगे उसका टिकट तीसरे बार तत्काल में जाकर कन्फ़र्म हुआ। फ़िर उधर से लौटते वक्त भी वही हाल हुआ। उसने 9 तारीख को सम्पर्क क्रान्ति में टिकट ली, कन्फ़र्म नहीं हुआ उसमें से भी डेढ सौ रुपये कट गये। और उसी दिन फ़िर 9 तारीख को तत्काल में, श्रमजीवी में टिकट मिली तो वापस आई। पिछले महीने तक नियम था कि टिकट कन्फ़र्म नहीं है तो कैंसिल करवाने पर उसके पूरा पैसा वापस होगा। अब इस महीने से रेलवे ने नया नियम शुरू किया है कि वेंटिग टिकट भी कैंसिल कराने पर पैसा कटेगा। अगर उनके सीट नहीं है तो वैंटिंग में टिकट न दें। किन्तु पैसे की लालच में ये 1000 से ज़्यादा ही वेटिंग कर देते हैं। जिससे इस भेंड़िया धसान में यात्रा करना इतना कठिन है कि खूद को कभी नरेन्द्र मोदी,या रेलमंत्री यात्रा करके देखें या ट्रेन की तरफ़ झांककर ही देखें तो पता चले कि जनता को कितना परेशानी झेलना पड़ रहा है। जिन यात्रियों का टिकट कॉन्फ़र्म नहीं हुआ 20-22 घंटे खड़े रहकर कैसे जा सकते हैं और अपना सामान कहां रखेंगे। अंत में वह सोचेगा कि इसमें पिसते हुए जाने से अच्छा नहीं जाना ही ठीक है। फ़िर टिकट कैंसिल करायेगा और यात्री के जेब में डाका पड़ेगा। यहां पब्लिक का जेब काटकर सरकार अपना आमदनी बढायेगी तो वह इस तरह से लूटने वाली सरकार को गाली नहीं तो और क्या देगी ?

सरकार ऐसा भी नियम बना दें कि वेंटिग वालों के लिये अलग से ट्रेन चलवा दें तो कन्फ़र्म वाले को भी दिक्कत न हो और वेंटिंग वाले भी आराम से जायेंगे। दिवाली के समय तो ट्रेनों में ऐसी भीड़ होती है कि जो यात्री चार महीने पहले टिकट बुक करवाते हैं उनको भी इतना परेशानी का सामना करना पड़ता है कि सांस लेना मुश्किल होता है। वेटिंग वाले और बेटिकट पहले ही जाकर ट्रेन में बैठ जाते हैं। बाद में टीटी ट्रेन के बाहर खड़ा होकर खिड़की से टिकट बनाता है और सबसे फ़ाईन भी वसूलता है। जिन यात्रियों का सीट रहता है वो वहां से हटने के लिये कहेगा, तो वेटिंग वालों की संख्या ज़्यादा होती है वो सब मिलकर लड़ेंगे। उनका कहना है कि आप जितने पैसे दिये हैं उससे मैं ज़्यादा दिया हूं। मैं क्यों हटूंगा। टीटी भी उसीका साथ देंगे कि भाई सबको जाना है पर्व है और वो भी पैसा दिया है वो कोई फ्री में नहीं बैठा है। बाथरूम तक जाना और ट्रेन में जो चढ गया उसके लिये उतर पाना भी बड़ी मुश्किल है। वही कवीरदास की बानी, कि एकही साधे सब सधै। जो चार महीने पहले टिकट बुक कराया है उसका भी और जिसका अभी तुरंत टीटी ने टिकट बनाकर दिया है उसका भी।

एक कोई भद्र व्यक्ति था जो ट्रेन में बैठा वो बाथरूम जाने के लिये काफ़ी कोशिष किया किन्तु वहां तक नहीं पहुंच पाया। तब उसी समय टीटी टिकट चेंकिंग के लिये आया तो वह उससे कहने लगा कि एक तो इतनी भीड़ है और दूसरे में टिकट काट कर देते जा रहे हो। भीड़ के कारण सांस लेना मुश्किल है। इस पर टीटी कहता है कि आपको दिक्कत महसूस हो रहा है तो आप उतर जाइये। इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि चार महीने पहले टिकट लिया है और अभी कह रहे हो कि उतर जाओ। तुमने इतने को खूद से टिकट बना कर क्यों दिया ? तुम तो पैसे वसूल करके अपना पॉकेट गर्म करते हो और हम लोग इतना परेशानी झेल रहे हैं। वेटिंग वालों की बजह से ही इतनी परेशानी हो रही है टिकट देने के अलावा तुम इन लोगों को ट्रेन से बाहर क्यों नहीं उतारा। तुम लोगों की ही लापरवाही के वजह से इतनी दुर्घटनाऐं होती है। बच्चे का हालत खराब हो रहा है। बाथरूम तक जाना मुश्किल है अगर वहां तक पहुंच भी जाय तो उसके अंदर तक यात्री घुसकर बैठा रहता है। इस पर टीटी ने कहा कि बाथरूम मत जाओ। तुम्हारे लिये पर्व है तो इन लोग़ों के लिये भी तो है ये लोग क्यों नहीं घर जायेंगे। दिक्कत है तो सभी के लिये है। अब जिसको 20-22 घंटे का सफ़र करना हो वह बाथरूम गये बिना कैसे रह सकता है ? इस बात पर टीटी से काफ़ी बक-झक हो गई।

जिन लोग़ों को ट्रेन से उतरना रहता है वह घंटों पहले उतरने के लिये धीरे-धीरे जगह बनाने लगते हैं। क्योंकि इतनी भीड़ में जल्दी नहीं उतरने पर ट्रेन खूल जायेगी। सरकार को ये साड़ी असुविधा को देखते हुए यात्रियों की सुरक्षा पर ध्यान देते हुए ट्रेनों की बोगी बढा दें और ट्रेन की संख्या ज़्यादा कर दें, रेलवे लाइने ज़्यादा बिछवा दें तो यात्रियों को इन सब परेशानी से छुटकारा पा सकता है। अगर ऐसा नहीं करेंगी तो पता नहीं कि चाय बेचने वाला प्रधानमंत्री और रेल मंत्री के नेतृत्व में भारतीय रेल और रेल यात्रीगण क्या-क्या भुगतेंगे, और क्या-क्या दुर्दिन देखेंगे।

रेलवे में सुरक्षा एवं सुविधायें बढाने के नाम पर तथा टिकटों की कालाबाजारी समाप्त करने के जितने भी दावे सरकार ने किये हैं वे सब खोखले साबित हो रहे हैं। हर उपाय का मतलब यात्रियों की लूट साबित हो रहा है। रेलवे को यदि किसी चिज़ की आवश्यकता है तो वह केवल भ्रष्टाचार से मुक्ति की है। यदि रेलवे भ्रष्टाचार से मुक्त हो जाए तो किसी प्रकार की कोई समस्या रहेगी ही नहीं।

-नीलिमा

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब